IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 12, Issue 1, December 2020
Impact Factor: 4.819

vxtk dk Hkkjr e iow'k vkj lkekftd lEcU/kk ij iHkko

M,- mn;Hkku ;kno

vflLViV ikQslj] fgUnh

राजकीय महिला महाविद्यालयए अम्बारी, आजमगढ़

मुगलों की सत्ता के ह्रास होने के बाद हिन्दू–मुस्लिम सम्बन्ध की दृष्टि से अंग्रेजों का भारत में आगमन एक महत्वपूर्ण घटना रही है। वैसे तो अकबर की सामंजस्यवादी नीति का परिणाम था कि उसका प्रभाव उसकी तीन पीढ़ियों तक दिखाई देता है। परन्तु औरंगजेब ने ऐसा कुछ नहीं किया उसने अपने साम्राज्य को तीन हिस्सो में बाँट दिया। डॉ0 ताराचन्द्र के शब्दों में– ''अभी तक उत्तराधिकार युद्व में राजकुमार स्वयं ही प्रतिद्वन्दी रहा करते थे, अब वे पीछे चले गये और उनके स्थान पर महत्वाकांक्षी सामंत, बड़े पदाधिकारी दलों के नेता शक्ति के असली प्रतियोगी बन गए।......... आपस के घातक संघर्ष खुलकर आरम्भ हो गए और उन्होंने साम्राज्य के विशाल आकार को नष्ट भ्रष्ट कर दिया।''[1]

मुगल साम्राज्य के पतन के कुद व्यावहारिक कारण और भी हैं। किसानों का अत्यधिक शोषण। कृषि, सामंती या अर्ध सामंती व्यवस्था पर आधारित जितने भी इहलौकिक साम्राज्य हुए हैं उनके पतन का कारण जन सामान्य का विशेष रूप से जागरूक एवं सचेत कृषक वर्ग का असंतोष ही रहा है। मुगल साम्राज्य का पतन जागीर व्यवस्था का ही परिणाम रहा है। जागीरों के हस्तांतरण ने अत्यधिक शोषण को जन्म दिया जो जमींदार और कृषक, दोनों ही वर्गों के विद्रोह का कारण बना। सभी विद्रोहों में कृषकों की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण रही। किन्तु वे स्वयं भी जाट, राजपूत, मराठा या अफगान जमींदारों और कबीला सरदारों के शोषण के शिकार हुए। फिर भी मुगलों को कृषकों के विरोध का सामना ही अधिक करना पड़ा।